ISSN: 2278-1439, Volume 06, Issue 01, No. 11, July-December 2016, Page No. 31-33

homepage: www.vcebhopal.ac.in

Research Pool

An International Interdisciplinary Journal

शिक्षण प्रतिमान में माध्यमिक शिक्षा हेतु शिक्षक की भूमिका

नेहा परिहार
सहायक प्राध्यापक
विक्टोरिया कॉलेज ऑफ एजुकेशन, भोपाल (म.प्र.)
Email: nehapyuvraj@gmail.com

प्रस्तावनाः

एक राष्ट्र अथवा समाज के लिये सबसे महत्वपूर्ण साधन मानव है। कोई भी राष्ट्र उस समय ही उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकता है जबकि उसके अन्दर प्रत्येक मानव को यह सुविधा प्राप्त हो कि वह स्वतंत्रता पूर्वक अपना उतना विकास कर सके जितना की उसमें विकास करने की क्षमता है।

वास्तव में मानव के विकास के इतिहास में शिक्षण एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है मानव ने अपने और दूसरे प्राणियों के बीच में यह अंतर पाया कि उसका सीखना स्वतः चलता रहता हैं जबकी मानव को सीखने के लिये शिक्षण की आवश्यकता होती है। जब समाज के ढाँचे का निर्माण हुआ तो शिक्षण समाज का एक महत्वपूर्ण कार्य बन गया। शिक्षण प्रदान करने के लिये विशिष्ट व्यक्तियों को उत्तरदायित्व दे दिया गया। जिन्हें शिक्षक एवं अध्यापक कहा जाने लगा। शिक्षक का कार्य है शिक्षण देना इसमें कोई संदेह नहीं कि शिक्षण का केन्द्र बिंदु सीखन में सुविधा लाना है जहाँ शिक्षण भी होना चाहिए शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों में परिवर्तन लाया जाता है।

हमारे बच्चों को क्या पढ़ाया जाए? इसकी ओर जनता का ध्यान लाने के लिये एन. सी.ई. आर.टी. ने सामाजिक विचार विमर्श की प्रक्रिया शुरू की। इस प्रक्रिया में काफी विश्लेषण है और ढेर सारी सलाह भी। मातृभाषा अत्यन्त महत्वपूर्ण माध्यम हैं बच्चों को उनके अपने ज्ञान सृजन में सक्षम बनाने में।

कोठारी कमीशन ने अपनी रिपोर्ट का आरम्भ इस कथन से किया कि 'भारत के भाग्य का निर्माण देश के कक्षा कक्ष में किया जाता है।

प्रभावशाली अध्यापक जन्मजात होते हैं तथा प्रशिक्षण द्वारा तैयार भी किये जाते है। शिक्षा एक विकास प्रणाली है जिससे प्रभावशाली अध्यापक तैयाार किये जाते है। अध्यापक तैयार करने की प्रयोगशाला विद्यालय को माना जाता हैं'। निःसंदेह देश के विकास में शिक्षा की अहम भूमिका है। एवं उत्तम शिक्षा कार्यक्रम का निर्धारण अध्यापकों की योग्यता के द्वारा होता है।

प्रभावशाली अध्यापक जन्मजात होते हैं तथा प्रशिक्षण द्वारा तैयार भी किये जाते हैं शिक्षा एक विकास प्रणाली है जिससे प्रभावशाली अध्यापक तैयार किये जाते है। अध्यापक तैयार करने की प्रयोगशाला विद्यालय को माना जाता है और विद्यालय की कक्षा कार्याशाला (कक्षा) में विकास की क्रियाओं का संचालन किया जाता हैं। इन कक्षाओं की प्रमुख क्रिया शिक्षण होती हैं। जब छात्र अध्यापक को कक्षा में शिक्षण अभ्यास का अवसर दिया जाता है तब उसे 'छात्र शिक्षण' कहते हैं। शिक्षण का मुख्य उद्देश्य शिक्षण कौशल एवं सक्षमताओं का विकास करना है। अध्यापक छात्र में छात्र में तीन प्रकार के कौशलों का विकास करता है।

- भाषायी कौशल
- शिक्षण कौशल
- सामाजिक कौशल

शिक्षण प्रारूप को शिक्षण प्रतिमान कहते है तथा यह शिक्षण सिद्धांत के लिये परिकल्पना का कार्य करते है। प्रतिमान, शिक्षण सिद्धांत की पूर्व अवस्था हैं।

शिक्षण प्रतिमान का अर्थ– ब्रूस. आर. जुआइस ने प्रतिमान की परिभाषा इस प्रकार की है–

'शिक्षण प्रतिमान अनुदेशन की रूपरेखा माने जाते है इसके अंतर्गत विशेष उद्देश्य प्राप्ति के लिये विशिष्ट परिस्थिति का उल्लेख किया जाता है। जिसमें छात्र व शिक्षक की अन्तः प्रक्रिया इस प्रकार की हो कि उनके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाया जा सके'।

माध्यमिक स्कूल शारीरिक बदलावों और अस्मिता विकास का समय होता है। यह गहन ऊर्जा और जीवनत्ता का दौर भी होता है। इस स्तर पर पाठ्यक्रम का लक्ष्य विषयों के बारे में जागरूकता बढ़ाना होता है। और विद्यार्थियों का उन विषयों के अध्यन की संभावनों और अवसरों से परिचित करवाना भी होता है। स्कूलों में बच्चों की कामयाबी उसके पोषण और सुनियोजित शारीरिक गतिविधियों के कार्यक्रमों पर निर्भर होती है। इसलिए जरूरी संसाधनों को सुदृढ़ बनाने में लगाना चाहिए यह सुनिश्चित करने के लिये विशेष प्रयासों कि जरूरत होगी की स्वास्थ और शारीरिक शिक्षा के कार्यक्रमों में शालापूर्व अवस्था से लेकर आगे तक लड़कों की तरह ही लड़कियों की ओर भी उतना ही ध्यान दिया जाये।

माध्यमिक स्तर पर शिक्षक को यह प्रयस करना चाहिए। कि विषयों के बीच की दिवारें इतनी नीची कर दी जायें की बच्चों ज्ञान का समग्र आनंद मिल सके और किसी चीज को समझने में मिलने वाली खुशी हासिल हो सके और ज्ञान का समग्र आनंद मिल सके और किसी चीज को समझने में मिलने वाली खुशी हासिल हो सके और ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ा जा सके तथा पढ़ाई रटन्त प्रणाली से मुक्त हो सके और पाठ्यचर्या का इस तरह संवर्धन हो कि वह बच्चों को चहूँमुखी विकास के अवसर मुहैया करवायें।

यह तथ्य है कि बच्चा ज्ञान का सृजन करता है इसका निहितार्थ है कि पाठ्यक्रम एवं पाठयपुस्तकें शिक्षक को इस बात के लिये सक्षम बनाऐं की वे बच्चों की प्रकृति और वाातावरण के अनुरूप कक्षायी अनुभव आयोजित करें ताकि सारे बच्चों को अवसर मिल पाये।

शिक्षण का उद्देश्य बच्चे के सीखने की सहज इच्छा और युक्तियों को समृद्ध करना होना चाहिए ज्ञान का मतलब ही दुनिया से जुडना है। यह केवल साधन नही है बल्कि साधन और साध्य दोनों है।

चूकि देश के बच्चो को शिक्षित करने का कार्य बहुत विशाल व महत्वपूर्ण है इसलिये यह आवश्यक है कि समय-समय पर हम साथ मिल बैठ कर स्वयं से ये सवाल पूछे 'इस कार्यक्रम में व्यक्त हम क्या कर रहें ? शिक्षा के नाम पर जो हम बच्चों को उपलब्ध करा रहें है क्या उसमें नयापन लाने का वक्त आ गया है ?

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1. **कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (2009).** शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार, विनोद पुस्तक मंदिरः आगरा।
2. **एस. के. गुप्ता (2008). शैक्षिक मनोविज्ञान,** प्रिन्टेज हॉल इण्डिया, नई दिल्ली।
3. **सिंह, रामपाल एवं शर्मा, ओ. पी. (2002). शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी**, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
4. **शर्मा, आ.ए. (2003).** शिक्षा तकनीकी, इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउसः मेरठ।
5. https://en.wikipedia.org/wiki/Handicraft.